बाढ़ और अकाल

भारतीय कथा

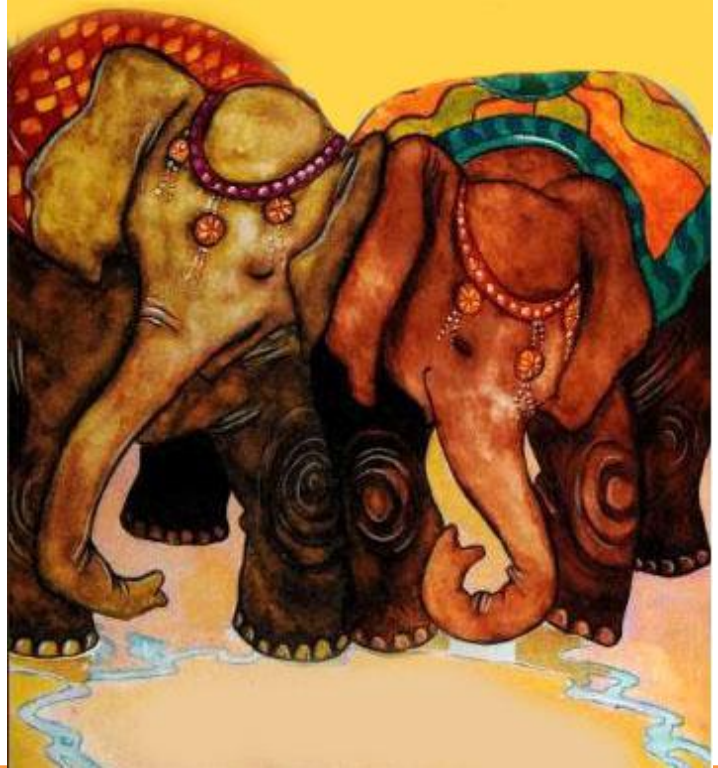

बाढ़ और अकाल

भारतीय कथा

पुराने ज़माने की बात है. राजा को एक हाथी ट्रेनर की सख्त जरूरत थी. राजा ने एक अच्छे ट्रेनर को बड़ा इनाम देने का वादा भी किया. राजा ट्रेनर से अपने दो बिगड़ैल हाथियों को प्रशिक्षित करवाना चाहता था.

एक दिन, एक काबिल ट्रेनर महल में आया और उसने नौकरी मांगी.

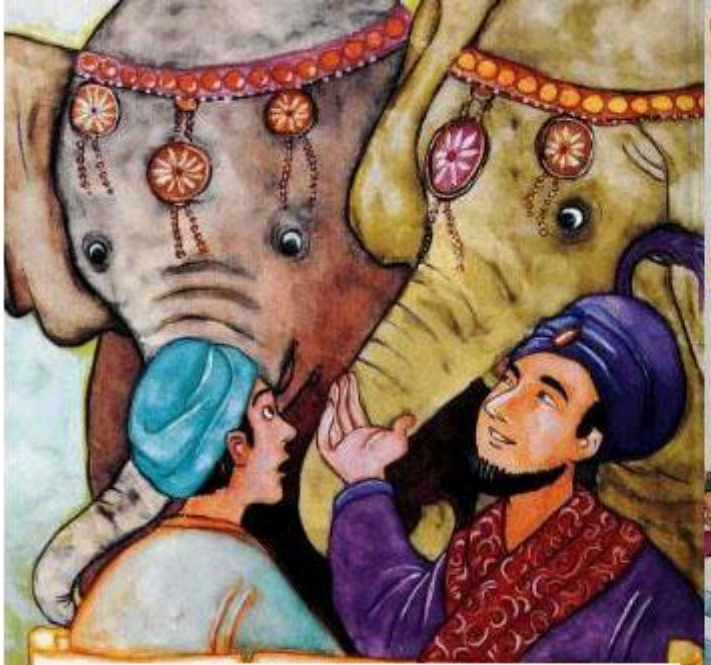

राजा स्वयं ट्रेनर को हाथियों से मिलवाने के लिए लेकर गया.
"एक का नाम है "बाढ़" और दूसरे का नाम है "अकाल," राजा ने कहा.
"कितने अजीब नाम हैं," ट्रेनर ने कहा. "मैं अचरज कर रहा हूँ कि उन्हें ऐसे नाम क्यों दिए गए."
ट्रेनर को असलियत जानने के लिए लंबे समय तक इंतज़ार नहीं करना पड़ा.

एक हाथी ने राजा के तैरने वाले ताल में छलांग लगा दी! वो उसमें खूब नहाया और उसने छींटे बरसाए. जो कोई उसके पास आता उस पर पानी के फव्वारे की बौछार पड़ती!
"अच्छा," ट्रेनर ने कहा. "यह ज़रूर "बाढ़" होना चाहिए."

फिर दूसरे हाथी ने राजा के केले के पेड़ पर हमला किया.
वो पेड़ का एक-एक फल खा गया!
"वो हाथी बड़ा लालची है!" राजा चिल्लाया. "वो दिन भर खाने के अलावा और कुछ नहीं करता है. लगता है एक दिन वो हमारे घर की सब चीज़ें खा जाएगा!"
"अच्छा," ट्रेनर ने सोचा. "यह हाथी ज़रूर "अकाल" होगा."

उन हाथियों को एक कठोर ट्रेनिंग की जरूरत थी.
इसलिए ट्रेनर ने उन्हें तुरंत काम पर लगाया.
उसने उनसे कड़ी मेहनत करवाई.

हर दिन सूरज निकलने से सूरज डूबने तक, उन हाथियों ने काम किया. उन्होंने चीज़ों को धक्का दिया और उन्हें खींचा. उन्होंने भारी सामान को इधर से उधर ढोया. उन्होंने दूसरे हाथियों की तुलना में दोगुना काम किया.

दिन के अंत में, दोनों हाथी थककर एकदम चूर-चूर हो जाते थे. थकान के मारे "अकाल" के गले में खाना तक नहीं उतरता था. वो सिर्फ अपना सिर हिलाता था.

"बाढ़" इतना थक जाता की राजा के ताल की बात तो दूर रही उसे नहाने तक की सुध नहीं रहती थी. प्रशिक्षक को राजा ने इनाम दिया. सच में राजा ने उसे दोगुना इनाम दिया.

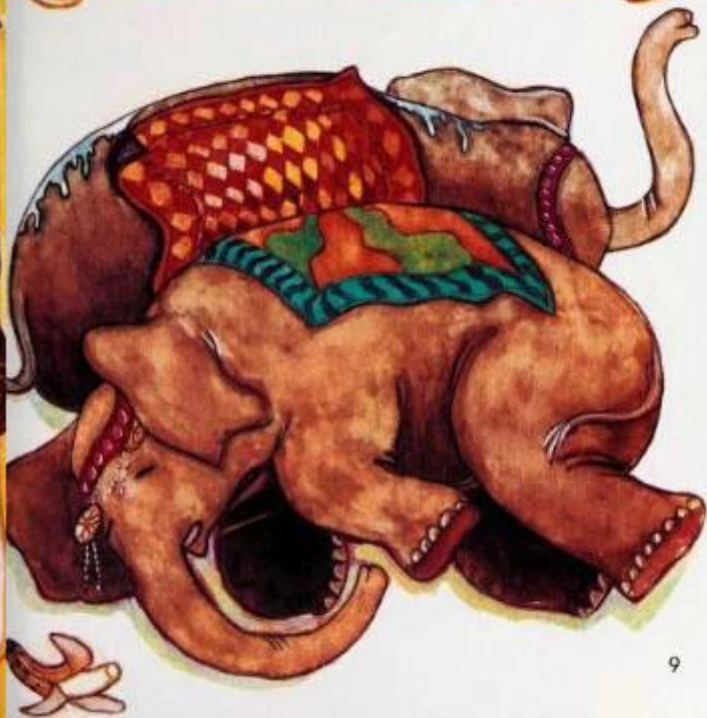

अब महल में सभी ओर शांति थी. पूरा माहौल बहुत शांतिपूर्ण था! सब तरफ शांति ही शांति थी.

पर अब पुराने दिनों का मज़ा ख़त्म हो गया था.

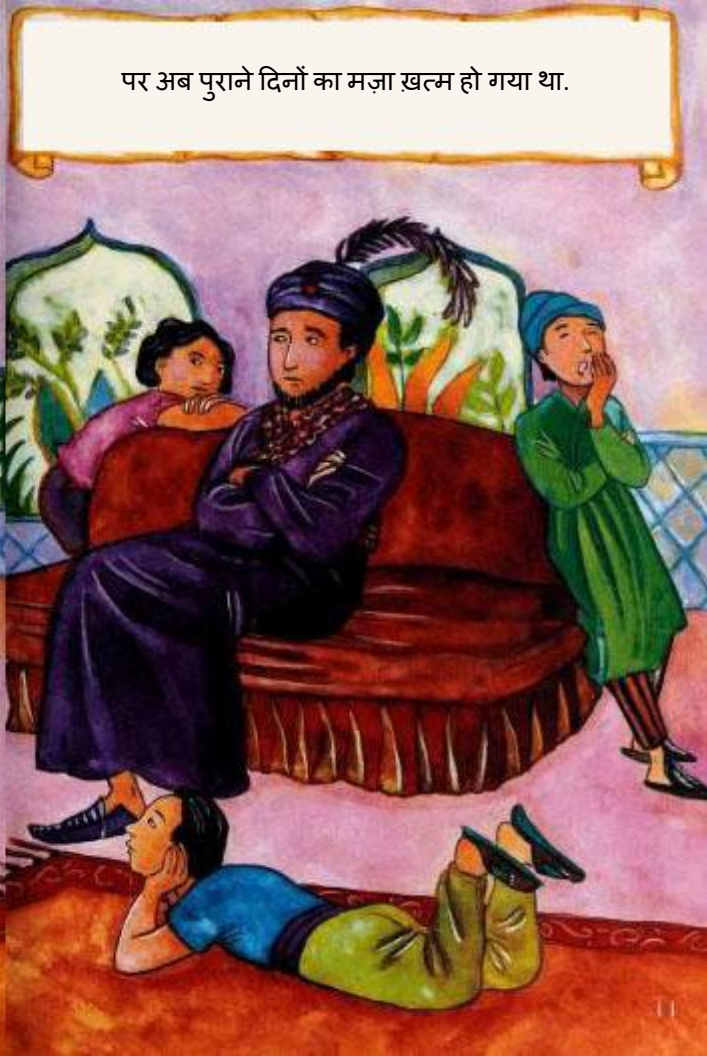

लोग पुराने दिनों के बारे में सोचने लगे, उसे याद करने लगे. वे उसके बारे में कहानियां सुनाने लगे. उन्होंने वो समय याद किया जब "बाढ़" ने राजा की पत्नी को आश्चर्यचकित किया था और जब "अकाल" राजा की पार्टी में घुस गया था!

यहाँ तक कि राजा भी इस बारे में गंभीरता से सोचने लगा. उसने अपने बच्चों के बारे में सोचा. पहले उसके बच्चे कितने खुश थे! यह याद करके राजा मुस्कुराया. फिर उसे समझ में आया कि उसे क्या करना चाहिए.

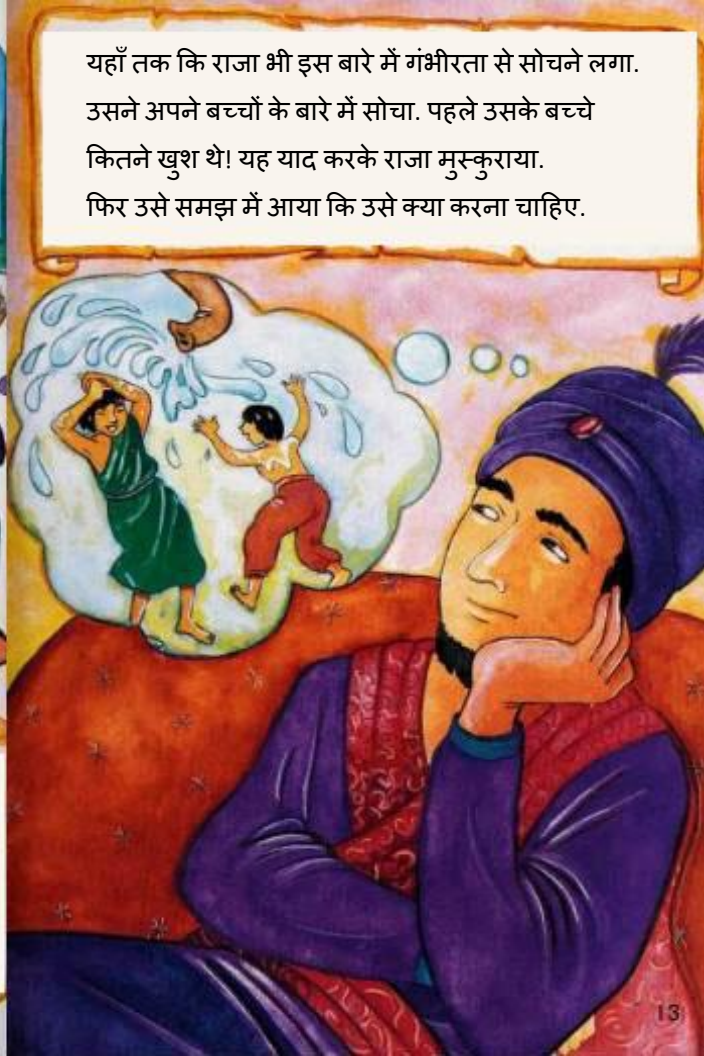

उसने ट्रेनर को फोन किया. "जल्द ही "बाढ़" और "अकाल" की ट्रेनिंग को पलटो और उन्हें पहले जैसा बनाओ," राजा ने कहा.

"उन्हें पहले जैसा बनाऊँ?" ट्रेनर ने पूछा.

"हाँ, उन्हें ट्रेनिंग देकर पहले जैसा बनाओ," राजा ने कहा.

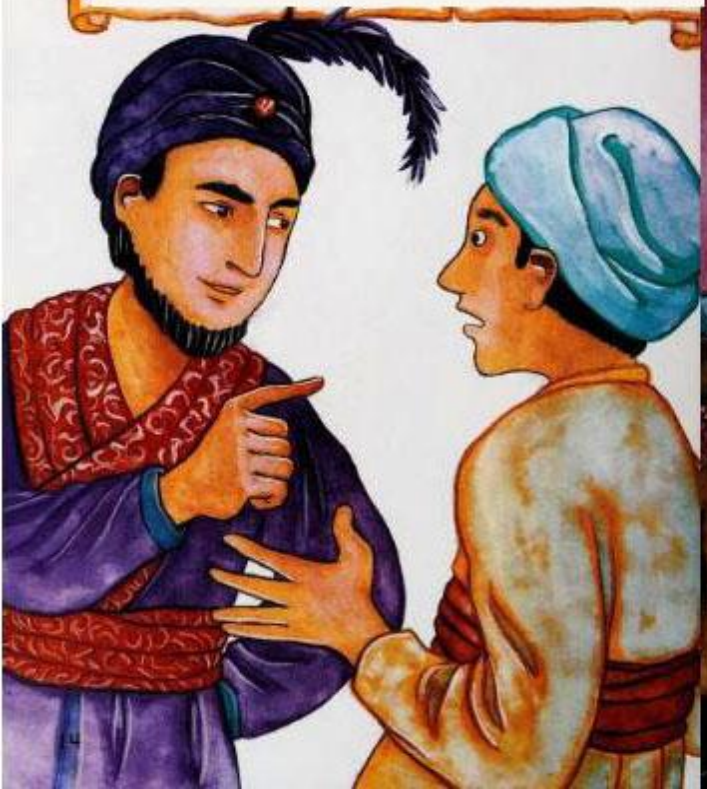

ट्रेनर को जैसा बताया गया उसने वैसा ही किया.

एक बार फिर महल के जीवन में रंग आया. अब वहां फिर से बहुत शोर-शराबा था! वहां बहुत गंदगी भी थी!

यह आश्चर्यजनक और मूर्खतापूर्ण भी था.

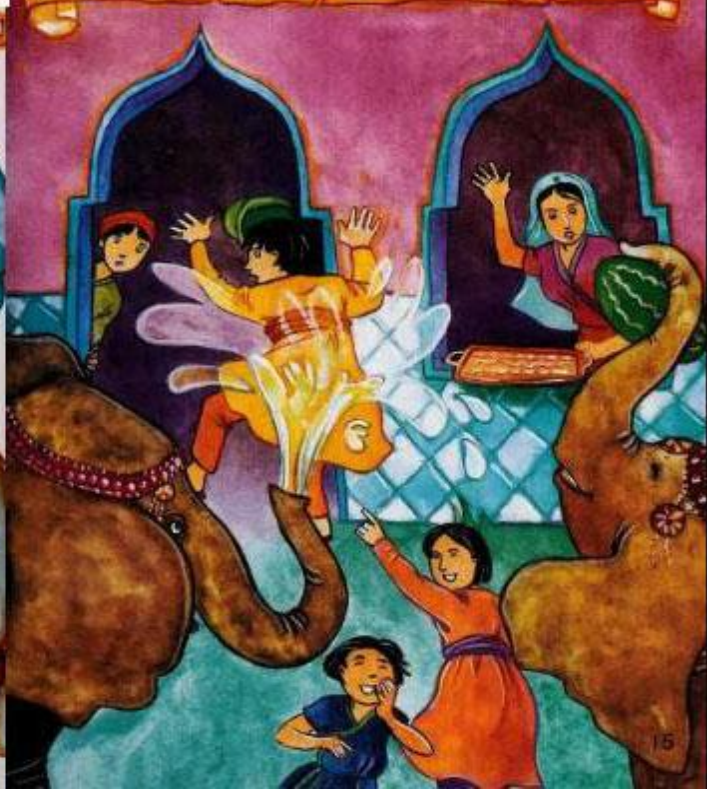

लेकिन सबसे बढ़कर, वो बड़ा मजेदार था!

समाप्त